आओ हम कुछ ढूंढ़ें...

-ब्र.कु. दिलीप राजकुले,शांतिवन

बात करते करते मेरे मुख से निकल गया अरे ढूंढ़ने से क्या नहीं मिलता! मेरे कहने का भाव यह था कि ढूंढ़ने से कुछ भी प्राप्त किया जा सकता है। जैसे कि जब खगोल वैज्ञानिक आकाश की ओर देखता है तो वह आकाश गंगाएँ ढूंढ़ निकालता है, आकाश में कई तारे-सितारे, नक्षत्रों को ढूंढ़ लेता है व उसकी दूरी भी माप लेता है, इतना ही नहीं, ग्रहों तक भी पहुँच जाता है। हाल ही भारत के वैज्ञानिकों ने मंगल ग्रह के कक्षा में मगलयान पहुँचाने का कारनामा कर दिखलाया जिससे तस्वीर ले सकें और एक तस्वीर माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी को दिखलाई भी गई। भूगोल वैज्ञानिक पृथ्वी में जल, तेल, सोना, चांदी व कोयला आदि कहाँ है, उसे ढूंढ़ निकाल लेता है। मुझे तथा भारत की जनता को नाज़ है कि भारतीय वैज्ञानिक खोज के मामले में आगे हैं। चिकित्सा विज्ञान को देख लो, इन्हें भी कई बड़ी-बड़ी कामयाबी मिली है। शरीर के हर अंग का प्रत्यारोपण कर देते हैं। है ना वैज्ञानिकों की कमाल! आज दुनिया में कम्प्यूटर साइंस को देख लीजिए, उसकी भी कमाल है जो कोई भी काम सहज और सरल; कम समय, कम एनर्जी, कम खर्च में कर देती है। हज़ारों किलो मीटर दूर बैठे व्यक्ति से जैसे सामने बैठे हों इस तरह बातचीत कर लेते हैं। विज्ञान की इतनी बड़ी कामयाबी को कोई भी नकार नहीं सकता। विज्ञान ने भी तरक्की बहुत की है।

यह सब होते हुए भी मनुष्यों के दिलों की दूरियाँ बढ़ गईं। चंद्रमा की शीतलता तक तो हम पहुँच गये लेकिन मनुष्य के दिल तक पहुँचकर उसे ठंडक हम प्रदान नहीं कर पाये। आज आराम की सभी सुविधाएं होने के बाद भी मनुष्य बेचैन है। कहते हैं सत्य स्वयं सिद्ध है, तो क्या हम सत्य हैं? यदि हम सत्य होते तो खुश होते, शांत होते, सुकून से होते! आज इसी की तलाश करने लोग जंगलों में, गुफ़ाओं में तपस्या करने गये, कुछ हद तक इन्हें शान्ति ज़रूर मिली परंतु संतुष्टता कहीं खो सी गई है। भौतिकता को ढूंढ़ने में साइंस की तरक्की बहुत अच्छी है, परंतु अभौतिक आत्मा व परमपिता परमात्मा को ढूंढ़ने की जागृति लोगों में कम है। खेद का विषय है कि मानव `मानव' को तो दूर, स्वयं को नहीं जान पाया। पहले यह कहावत थी कि मनुष्य का मन तो एक अथाह सागर के समान है, `जैसे सागर के भेद को कोई नहीं पा सका वैसे ही मनुष्य के मन को भी कोई नहीं जान सका'।

विज्ञान के पहलू से देखा जाये तो मानसिक एकाग्रता अथवा निरीक्षण एवं परीक्षण की प्रवृत्ति, अन्वेषण, शोध, क्रियात्मकता और निर्णय लेने की योग्यतायें ज़रूरी हैं। इनके बिना एक अच्छा वैज्ञानिक बनना कठिन है या विज्ञान के क्षेत्र में अध्ययन करने के बावजूद भी निर्माण,शोध में सफल होना कठिन है। इसकी शुरुआत कहाँ से होती है? मानसिक एकाग्रता से ना! इसका अर्थ यह हुआ कि आज हम एकाग्र नहीं हैं। जब तक एकाग्र नहीं होंगे तब तक मन शांत नहीं होगा। साइंस भी शांति के साथ चलता है अर्थात, कहते है कि साइंस की कोई भी खोज साइलेंस से शुरु हुई है। कोई भी चीज़ को खोजने के लिए गहरी शांति व दृढ़ इच्छाशक्ति की ज़रूरत होती है। जब कोई वैज्ञानिक किसी शोध में जुट जाता है तो उसका योग उसके साथ हो जाता है, जिसका वह गहराई से अध्ययन व शोध कर रहा होता है। वैज्ञानिकों ने खरबों न्यूरोन वाले मस्तिष्क जो लगभग तीन पौंड का है वह समूचे शरीर को चलाता है इसकी खोज तो कर ली, परन्तु अखरोट की शक्ल के इस मस्तिष्क को चलाने के लिए ऊर्जा कहाँ से आती है, यह नहीं ढूंढ़ पाये, इसलिए मस्तिष्क को चलाने वाली ऊर्जा को ढूंढ़ने के लिए राजयोग का अभ्यास ज़रूरी है। राजयोग के अभ्यास से मन व बुद्धि एकाग्र हो जायेगी और सही रूप में आत्मा व परमात्मा को ढूंढ़ पायेंगे। अगर आप मस्तिष्क को ही आत्मा समझ लें तो यह गलत है। ऐसा भी देखा गया है कि मस्तिष्क के निष्क्रिय हो जाने पर भी कभी-कभी मनुष्य ज़िन्दा रहता है। 20 जुलाई सन् 1961 की बात है कि तुर्की में अकारा विश्वविद्यालय में सर्जन अल्प-रील को बिजली का एक झटका लगा और वे बेहोश हो गए। अन्य डॉक्टरों ने अपने उस साथी डॉक्टर का काफी हमदर्दी से इलाज किया। परंतु वे आश्चर्यचकित हो गए जब उन्होंने देखा कि मस्तिष्क के स्पन्दन बन्द हो जाने के बावजूद भी रील साहब ज़िन्दा हैं। उन्होंने उसके नाक और मुख में नलियां लगाकर उन्हें फलों का रस आदि दिया और ज़िन्दा रखा। जब उसके मस्तिष्क को उन्होंने इलेक्ट्रोएनसेफेलोग्राम(ई.ई.जी.) नामक यन्त्र लगाकर देखा तो वह कोई भी हरकत नहीं दिखा रहा था। उन्होंने ऐसे परीक्षण किए, उनसे यह निष्कर्ष स्पष्ट रूप से सामने था कि उसका मस्तिष्क मर चुका था परन्तु फिर भी मनुष्य ज़िन्दा था जिसका दूसरे शब्दों में भाव यह है कि आत्मा मस्तिष्क से अलग ही है। इसलिए मनुष्य को सत्य व असत्य का बोध होना ज़रूरी है और सत्य को दृढ़तापूर्वक, एकाग्रता के साथ ढूंढ़ना चाहिए। हम तो यही चाहेंगे कि आप भी इसे सीखें व समझें तथा अपने जीवन में धारण करके अपने को एक उन्नत, एकाग्र, शांतचित्त साइंटिस्ट बना लें।

वैज्ञानिकों ने खरबों न्यूरोन वाले मस्तिष्क जो लगभग तीन पौंड का है वह समूचे शरीर को चलाता है इसकी खोज तो कर ली, परन्तु अखरोट की शक्ल के इस मस्तिष्क को चलाने के लिए ऊर्जा कहाँ से आती है, यह नहीं ढूंढ़ पाये, इसलिए मस्तिष्क को चलाने वाली ऊर्जा को ढूंढ़ने के लिए राजयोग का अभ्यास ज़रूरी है। राजयोग के अभ्यास से मन व बुद्धि एकाग्र हो जायेगी और सही रूप में आत्मा व परमात्मा को ढूंढ़ पायेंगे।

आवश्यक सूचना

ग्लोबल हॉस्पिटल स्कूल ऑफ नर्सिंग, शांतिवन तहलटी, शिवमणि होम के पास के लिए तीन फीमेल नर्सिंग ट्यूटर व एक मेल नर्सिंग ट्यूटर की अतिशीघ्र आवश्यकता है।

योग्यता: बी.एस.सी. नर्सिंग, मान्यता प्राप्त यूनिवर्सिटी से व दो वर्ष का नर्सिंग स्कूल व कॉलेज का टीचिंग एक्सपीरियंस/क्लीनिकल एक्पीरियंस। सम्पर्क करें:

मो. नं- 8094652109, 8432345230

ई. मेल:- ghsn.abu@gmail.com

सिरोही-राज.। जिला कलेक्टर वी. सरवण कुमार द्वारा माननीय मंत्री ओटाराम देवासी के हस्तों से डॉ. रमेश तथा डॉ. शोभना को विशेष प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

गुमला-लोहरदगा(झारखण्ड)। सांसद सुदर्शन भगत को ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय माउण्ट आबू आने का निमंत्रण देते हुए ब्र.कु. कंचन। साथ हैं भगवती माता व अन्य।

सेक्टर 7- सिकन्दरा (आगरा)। बेटी बचाओ, सशक्त बनाओ कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए शिवालिक स्कूल के डायरेक्टर एस.एस. यादव, ऊषा यादव, एस.पी.बबीता साहू, ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. मधु व अन्य।

सोनीपत। विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण करने के पश्चात् जी.टी. रोड से सेवाकेन्द्र के कैम्पस तक पक्की सड़क का शिलान्यास करते हुए कविता जैन,महिला कल्याण मंत्री। साथ हैं राजीव जैन,उपाध्यक्ष,भाजपा, ब्र.कु. अमीरचंद, ब्र.कु. अनीता व अन्य।

कलैया बारा-नेपाल। 'खुशहाल जीवन एवं स्वस्थ समाज को लाएगा राजयोग मेडिटेशन' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए जिला न्यायाधीश बोधराज शर्मा, नगरपालिका प्रमुख सुरेश राउत, जिला प्रहरी एस.पी. नरेन्द्र राज उप्रेली, प्रमुख जिला अधिकारी कृष्ण प्रसाद ढुंगाना, प्रशिक्षक ब्र.कु. राजू व ब्र.कु. रविणा।

नवरंगपुर-ओडिशा। 'गुड बाय डायबिटीज़ कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए 84 बी.एस.एफ. कमाण्डेंट सी.पी. मॉन्गलांग, जिला अति. मुख्य मेडिकल ऑफिसर सोमारानी मिश्र, डॉ. श्रीमंत साहू, ब्र.कु. नीलम, ब्र.कु. सावित्री व ब्र.कु. शशि।